मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

नालायक विधायकों पर निर्भरता 3
चौकीदार मोदी की मानहानि 4
कानून है भाजपा की जेब में 5
गंगा के लिए एक और प्राण त्याग 6
कृष्णपाल-अवतार गए तेल लेने 8

वर्ष 32 अंक -24 फ़रीदाबाद 28 अप्रैल-4 मई 2019 फोन - 9999595632 2.50 ₹

आम आदमी पार्टी का प्रत्याशी रातोंरात 'पंडित' बन गया

खुद को सेकुलर कहलाने वाली 'आप' बन गई 'हिन्दू-मुस्लिम' पार्टी

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: फरीदाबाद लोकसभा सीट पर इस वक्त कांग्रेस और भाजपा के साँपनाथ और नागनाथ के बाद जिस नए नाम की चर्चा है, वह है आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार पंडित नवीन जयहिंद शिवभक्त कावंड़िया। दरअसल उनका नाम फ़रीदाबाद सीट से उम्मीदवार घोषित होने से पहले नवीन जयहिंद ही था लेकिन फरीदाबाद से नाम घोषित होते ही नवीन ने अपने नाम के आगे पंडित शब्द खुद ही जोड़ लिया एवम् माथे पर लम्बा तिलक लगाना भी शुरू कर दिया। चूँकि वह कावंड़ यात्रा भी कर चुके हैं तो कावंड़िया और शिवभक्त लगाने से भला कौन रोक सकता है। लेकिन नामों में इन तमाम शब्दों को जोड़ने का संबंध सीधा चुनाव से है।

आम आदमी पार्टी का गणित

हरियाणा के लिए आम आदमी पार्टी यानी आप ने जब जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) से चुनावी समझौता किया तो फरीदाबाद लोकसभा सीट पर उसकी नज़र शुरू से थी। फरीदाबाद से गूजर, जाट या मेव मुसलमान ही हमेशा सांसद बनते रहे। आप को अपने गणित के हिसाब से यह लगता है कि वह थोड़े वोट गूजरों का ले लेगी, जाट वोट जेजेपी दिला देगी और आप सुप्रीमो केजरीवाल की सेकुलर छवि की वजह से मुसलमान भी आप को वोट देंगे और चूँकि नवीन जयहिंद ब्राह्मण हैं तो डेढ़ लाख ब्राह्मण मतदाता भी उन्हें ज़रूर वोट दे देंगे। इस सारे मुग़ालते में केजरीवाल ने नवीन जयहिंद को फरीदाबाद से उतार दिया। लेकिन केजरीवाल यह भूल गए कि हरियाणा में लोकसभा चुनाव दिल्ली जितना लड़ना आसान नहीं है।

पंडित नवीन जयहिंद बनने की कहानी

आम आदमी पार्टी की एक ख़ासियत है कि वह डेटा जमा करने, उनका विश्लेषण कर चुनाव लड़ने और उसमें सोशल मीडिया का हर नैतिक-अनैतिक तरीक़े से इस्तेमाल कर हंगामा करना उसे बखूबी आता है। नवीन जयहिंद जब तक फरीदाबाद से प्रत्याशी नहीं बने थे तब तक वह नवीन जयहिंद थे। प्रत्याशी बनते ही वह पंडित नवीन जयहिंद हो गए। माथे पर तिलक लगाकर पलवल के मंदिर में पहुँचे और हुंकार भरी कि ब्राह्मण अस्मिता के लिए वह मैदान में हैं। खुद को पुराना कावंड़िया और शिवभक्त बताते हुए आशीर्वाद माँग लिया। उनके तिलक लगे और आप की टोपी के साथ फोटो छपवाए गए और अब बाँटे जा रहे हैं। पलवल, बल्लभगढ़, हथीन के ब्राह्मण बहुल गाँवों में उनके प्रोग्राम लगाये गए हैं।

पंडित नवीन जयहिंद अगर यहीं तक सीमित रहते तो ठीक था लेकिन उनके कार्यकर्ता शरारत करने में भी जुट गए हैं

और कोई ताज्जुब नहीं कि इससे फरीदाबाद की फिज़ा ख़राब हो जाए।

शरारत से भरा ट्वीट

आम आदमी पार्टी हरियाणा के प्रवक्ता कुलदीप कादयान ने 25 अप्रैल को एक शरारतपूर्ण ट्वीट किया कि भाजपा प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर ने ब्राह्मणों को टुच्चे और चोर कहा। कुलदीप ने लिखा - गुर्जर साहब ब्राह्मण मांग कर खा सकता है आपकी तरह लूट-खसोट नहीं करते, जो आपने बोला है वो ब्राह्मणों का अपमान है, पूरा ब्राह्मण समाज आपको सबक सिखाने का काम करेगा...

...हालाँकि हक़ीक़त यह है कि कृष्णपाल गुर्जर ने ऐसी कोई बात नहीं कही थी।

इस ट्वीट के सामने आते ही फरीदाबाद भाजपा ने भी ट्वीट करके नवीन जयहिंद को ललकारा। भाजपा ने ट्विटर पर ही इसकी शिकायत फरीदाबाद पुलिस से कर दी और कहा कि कुलदीप कादयान के खिलाफ केस दर्ज किया जाए। इसके बाद कुलदीप कादयान ने जवाब दिया कि कृष्णपाल गुर्जर ने वह बात नवीन जयहिंद के लिए कही थी और चूँकि नवीन जयहिंद ब्राह्मण हैं तो यह पूरी ब्राह्मण बिरादरी का अपमान है।

यह घटना बताती है कि आप प्रवक्ता ने शरारत की थी लेकिन अगर कृष्णपाल गुर्जर ने दूसरे प्रत्याशी को टुच्चा और चोर कहा है तो वह निंदनीय तो ज़रूर है लेकिन उसे पूरे ब्राह्मण समाज का अपमान बताना ग़लत है।

नवीन जयहिंद के चुनाव प्रचार की दिशा बता रही है कि वे ब्राह्मण समाज पर ज़्यादा फ़ोकस कर रहे हैं। तमाम गाँवों में ब्राह्मण समाज के कार्यक्रमों में धार्मिक चिन्ह फरसा और तलवारें लहराई जा रही हैं। यह मामला चुनाव आयोग के संज्ञान में भी आ चुका है और नवीन जयहिंद को कभी भी नोटिस जारी हो सकता है।

दरअसल, नवीन जयहिंद को किसी ने गुरूमंत्र दिया है कि फ़रीदाबाद का पहला सांसद ब्राह्मण (धर्मवीर वशिष्ठ) था। अगर नवीन जयहिंद इस बात को प्रमुखता से रखें तो कम से कम ब्राह्मणों का सॉलिड वोटबैंक तो उनकी मदद कर सकता है। फिर थोड़े बहुत वोटों की मदद और मिल जाएगी और आम आदमी पार्टी यह सीट आसानी से निकाल ले जाएगी। आम आदमी पार्टी यह मानकर चल रही है कि भाजपा के कृष्णपाल गुर्जर और कांग्रेस के अवतार सिंह भड़ाना के बीच गूजर वोटों का जबरदस्त बँटवारा होगा, जिसका फ़ायदा आप उठा सकती है। बहरहाल, इस मुग़ालते के साथ आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी ने फरीदाबाद लोकसभा सीट के चुनाव को दिलचस्प बना दिया है।

जाट मतदाताओं का गुणाभाग

जिस गणित के आधार पर आप नवीन जयहिंद को लेकर आई, उसी गणित के आधार पर बहुजन समाज पार्टी और मरणासन्न हालत में पहुँच चुकी चौटाला की इनैलों ने जाट प्रत्याशी यहाँ से उतार दिये हैं। जाट शुरू से भाजपा के साथ रहा है। फ़रीदाबाद लोकसभा सीट पर ढाई लाख जाट मतदाता हैं। जाटों ने भाजपा टिकट पर चार बार रामचंद्र बैंदा को सांसद बनाया। हरियाणा में जाट आरक्षण के लिए हुए जाट आंदोलन और जाटों की लीडरशिप छिन जाने से जाट सिर्फ फरीदाबाद या भिवानी में ही नहीं नाराज़ हैं बल्कि पूरे हरियाणा में नाराज़ हैं। बसपा के जाट प्रत्याशी को लगता है कि ढाई लाख जाट और दो लाख दलित वोट से जाट इस सीट को निकाल सकता है।

जेजेपी की राजनीति

जेजेपी शुद्ध रूप से अभी जाट राजनीति पर फ़ोकस कर रही है। कुछ पॉकेट्स में उसे कामयाबी भी मिली है। एक तरह से फ़रीदाबाद और गुड़गाँव को उसने प्रयोग के तौर पर लिया है। अगर फरीदाबाद और गुड़गाँव में जाट वोटर उसके इशारे पर अपने वोट ग़ैर जाट यानी फ़रीदाबाद में आप के ब्राह्मण और गुड़गाँव में आप के मुस्लिम प्रत्याशी को ट्रांसफ़र कर देता है तो जेजेपी का भविष्य हरियाणा की राजनीति में उज्जवल और सुरक्षित हो जाएगा। इनैलो इन दोनों सीटों पर कितने जाट वोट खींच पाएगी, उसका भविष्य भी तय हो जाएगा। यानी लोकसभा चुनाव में ग़ैर जाट बेल्ट में दोनों सीटों पर जाट वोटों का ट्रांसफ़र भविष्य की राजनीति को दिशा देगा। जेजेपी और आप के चुनावी गठबंधन का दारोमदार इन्हीं दो सीटों पर रहेगा।

भाजपाई कृष्णपाल के मुकाबले कांग्रेस ने उतारा अपना पुराना अवतार
सांपनाथ से भिड़ने आया नागनाथ, चुनने की आज़ादी है चुन लो कोई एक

फ़रीदाबाद (म.मो.) अवतार भड़ाना के कांग्रेसी उम्मीदवार होने की प्रबल संभावना को भांपते हुए '**मज़दूर मोर्चा**' ने अपने 24 फ़रवरी-2 मार्च के अंक में इस बाबत लिख दिया था। इसके बावजूद,कांग्रेस ने अपना टिकट तिगांव से विधायक ललित नागर को दे दिया। लेकिन अवतार भला कहां टिकने वाला था। उन्होंने इसे अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया। जब सवाल प्रतिष्ठा का बन जाय तो उसके लिये कुछ भी खर्च किया जा सकता है। अरावली की पहाड़ियों से लूटा अकूत धन फ़िर किस काम का जब 'प्रतिष्ठा' ही न रहे। लिहाजा मुंह मांगे दाम देकर अवतार ने कांग्रेस का टिकट खरीद ही लिया।

अवतार के इस धन बल के सामने पूर्व मूख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा का सियासी बल भी धरा रह गया। सर्वविदित है कि सन् 2014 में इसी सीट से अपनी हार के लिये अवतार ने हुड्डा व उनके समधी एवं पलवल से कांग्रेसी विधायक कर्ण दलाल को जिम्मेदार ठहराते हुए बहुत बेहूदा बकवास की थी। उसके बाद कांग्रेस पार्टी को गालियां देते हुए भाजपा में जा घुसे। भाजपा के टिकट

पर यूपी विधानसभा का चुनाव लड़कर विधायक बन गये। लेकिन वहां के 400 विधायकों में अवतार की न तो कोई औकात थी और न ही किसी प्रकार का काम-धंधा वहां जमने पाया। हां, भाजपा विधायक होने का इतना लाभ जरूर रहा कि इन पर सीबीआई एवं आयकर के छापे नहीं पड़े; क्योंकि भाजपा में शामिल होते ही बड़े से बड़े पापी के पाप धुल जाते हैं।

शेष पेज दो पर